Golden Research thoughts
Volume 2, Issue. 1, July 2012
ISSN:-2231-5063

Available online at www.aygrt.net

ORIGINAL ARTICLE

मिड–डे मील कार्यक्रम के उद्देश्य

सरिता

शोधार्थी, सी एम जे विश्वविद्यालय, शिलांग (मेघालय)

प्रस्तावना :–

राष्ट्रीय पोषाहार कार्यक्रम जिसे मिड–डे–मील योजना के नाम से जाना जाता है। केन्द्र सरकार द्वारा प्रायोजित है जिसका शुभारम्भ 15 अगस्त 1995 को किया गया। इस योजना का प्रमुख उद्देश्य प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण को बढ़ावा देना था। इसके साथ–साथ इस योजना के द्वारा प्राथमिक स्तर के सभी बच्चों का विद्यालय में नामांकन कराना विद्यालय जाने वाले बच्चे नियमित रूप से विद्यालय में उपस्थिति रहें,

बच्चों की स्मरण शक्ति बढे तथा साथ–साथ उनके पोषण स्तर में भी वृद्धि हो। आरम्भ में यह योजना प्रथम वर्ष में 2408 खण्डों में आरम्भ की गई तथा 1997–98 तक विभिन्न चरणों में पूरे देश में लागू हुई। आरम्भ में यह योजना सरकारी तथा सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालय में पढ़ रहे बच्चों के लिए शुरू की गयी थी तथा अक्टूबर 2002 मsa (Education Guarantee Scheme) , AIE (Alternative & Innovative Education) केन्द्रों को भी इसमें शामिल कर लिया गया।

मिड–डे–मील कार्यक्रम के उद्देश्य

लोकतंत्र के सफल संचालन के लिये शिक्षित तथा प्रबुद्ध नागरिकों की आवश्यकता है। लोकतन्त्रीय देशों में प्रत्येक व्यक्ति को प्रारम्भिक शिक्षा प्रदान करना अनिवार्य माना गया है। जब भारत 1947 में स्वतंत्र हुआ तब उसकी जनसंख्या का 85 प्रतिशत भाग निरक्षर था तथा 6–11 वर्ष की आयु वाले केवल 31 प्रतिशत बच्चे विद्यालयों में जा रहे थे। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने संविधान में यह प्रावधान किया कि राज्य को 14 वर्ष तक के सभी बच्चों की निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था करने का प्रयास करना चाहिये। इसकी पूर्ति सन् 1960 तक हो जानी चाहिये। परन्तु इसमें पर्याप्त साधनों की कमी जनसंख्या में भारी वृद्धि, लड़कियों की शिक्षा में रूकावटें, गरीबी तथा माता–पिता की निरक्षरता तथा शिक्षा के प्रति उदासीनता जैसी बड़ी कठिनाइयों एवं बाधाओं के कारण संविधान निर्देशों की पूर्ति आज तक नहीं हो पाई है। चारों ओर इस निर्देश की पूर्ति की माँग हो रही है यह मांग सामाजिक न्याय तथा लोकतंत्र दोनों ही दृष्टियों से आवश्यक है। शिक्षा के सार्वजनीकरण के लिये मिड–डे मील कार्यक्रम का केन्द्र तथा राज्य सरकार द्वारा संचालन इसी क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। मिड–डे मील कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है –

6–14 वर्ष के सभी बच्चों का नामांकन :–

शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लिये सभी क्षेत्रों के लिये विद्यालयी सुविधाएँ प्रदान कर देना ही पर्याप्त नहीं है वरन् इसके साथ–साथ नामांकनों की संख्या बढ़ाने का प्रयास भी करना आवश्यक है। नामांकन का सार्वभौमिकरण न होने का प्रमुख कारण बच्चों की आर्थिक दशा का खराब होना है जो अपने माता–पिता की जीविकोपार्जन में सहायता करते है। वे विद्यालय जाने की बजाय अपने परिवार की आय की पूर्ति के लिये फार्म एवं खेतों, दुकानों तथा कारखानों में काम करते हें। लड़कियां जीविकोपार्जन में प्रत्यक्ष रूप से सहायता न देकर घर के कामकाज तथा छोटे भाई–बहनों की देखभाल करती हैं। ऐसे बच्चे विद्यालय जाने में असमर्थ रहते हैं क्योंकि इनको परिवार की दृष्टि से किसी ना किसी कार्य के लिये

Please cite this Article as : ***सरिता*** **,** ***मिड–डे मील कार्यक्रम के उद्देश्य*** **: Golden Research Thoughts (July; 2012)**

आवश्यक समझा जता है। साथ ही माता–पिता की निरक्षरता तथा शिक्षा के प्रति उदासीनता नामांकन के सार्वभौमिकरण के मार्ग में बहुत बड़ी बाधा है। ऐसे गरीब माता–पिता अपने बच्चों का नामांकन विद्यालय में करायें तथा नियमित रूप से अपने बच्चों को विद्यालय में भेजें इसके लिये केन्द्र सरकार द्वारा मिड–डे मील कार्यक्रम को चलाया जा रहा है जिसके अन्तर्गत विद्यालय पोषक तत्वों से युक्त पका हुआ मध्यान्ह भोजन कक्षा 1–8 तक के सभी विद्यार्थियों को उपलब्ध कराने का प्रावधान है।

उपस्थिति में वृद्धि करना :–

बच्चों का नियमित रूप से विद्यालय में उपस्थित ना होने के लिये कई कारण उत्तरदायी है। भारत की अधिकांश जनसंख्या आज भी गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन कर रही है। ऐसे परिवारों के बच्चे जीविकोपार्जन में अपने माता–पिता की सहायता करते हैं जिसके कारण वो विद्यालय में नियमित रूप से नहीं जा पाते हैं। कुछ बच्चे गरीबी के कारण भोजन में पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व ना मिल पाने के कारण कुपोषण का शिकार हो जाते हैं तथा ज्यादातर अस्वस्थ रहते हैं जिसके कारण वो नियमित रूप से विद्यालय नहीं जा पाते। ऐसे बच्चे नियमित रूप से प्रतिदिन विद्यालय में आयें इसके लिये 'मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम' चलाया जा रहा है ताकि आर्थिक रूप से पिछड़े बालकों को भोजन उपलब्ध कराया जा सके तथा कुपोषण का शिकार बच्चों के पोषण स्तर में सुधार किया जा सके।

ड्रॉप आउट को रोकना :–

जो बालक प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश करता है उससे यह आशा की जाती है कि वह पांच वर्ष में अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी कर लेगा और अन्त में कक्षा पांच उत्तीर्ण कर लेगा। परन्तु व्यावहारिक रूप में ऐसे अनेक छात्र मिलते हैं जो अति उत्साह से प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश लेते हैं परन्तु वे कुछ ही समय के उपरान्त और कभी–कभी 3 या 4 वर्ष के पश्चात विद्यालय से अपना सम्बन्ध–विच्छेद कर देते हैं। इस प्रकार के छात्र प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम को समाप्त नहीं करते हैं। विद्यालय छोड़ने के कई कारण हो सकते हैं लेकिन गरीबी तथा शारीरिक अस्वस्थता इन कारणों में प्रमुख होते हैं। गरीबी तथा शारीरिक अस्वस्थता के कारण ड्रॉप आउट को रोकने के प्रयास मिड–डे–मील कार्यक्रम के द्वारा किये जा रहे हैं ताकि गरीब बच्चों को एक समय का मुफ्त पौष्टिक भोजन दिया जा सके तथा प्रोटीन तथा अन्य पोषक तत्वों से युक्त भोजन उपलब्ध कराकर कुपोषण का शिकार बच्चों के पोषण स्तर में वृद्धि की जा सके। छात्रों के पोषण में वृद्धि करना :–

गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने के कारण अधिकांश भारतीय परिवार अपने बच्चों को पौष्टिक भोजन उपलब्ध नहीं करा पाते हैं जिसका उनके बच्चों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। कुपोषण बच्चों को राष्ट्र तथा समाज के विकास में अपना योगदान दे सकने में सक्षम एवं पूर्णतः विकसित युवा बनने से भी रोकता है। बच्चे कुपोषण का शिकार ना हों तथा कुपोषित बच्चों के पोषण स्तर में सुधार किया जा सके इसके लिये प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिये मिड–डे–मील कार्यक्रम चलाया जा रहा है, जिसके अन्तर्गत बच्चों को पोषक तत्वों तथा प्रोटीन युक्त मध्यान्ह भोजन विद्यालयों में देने की व्यवस्था की गई है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत कुपोषण का शिकार बच्चों की समय–समय पर डॉक्टरी जांच तथा लौह फौलिक एसिड और विटामिन 'ए' जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वों की पर्याप्त मात्रा की भी सिफारिश की गई है।

अध्ययनरत विद्यार्थियों का ठहराव सुनिश्चित करना :–

बच्चे नियमित रूप से विद्यालय में उपस्थित नहीं होते हैं। ऐसे बच्चों की संख्या अधिक जो सप्ताह में एक या दो–दिन विद्यालय में जाते हैं या विद्यालय से बीच में ही घर या कहीं और चले जाते हैं क्योंकि या तो वो शारीरिक रूप से अस्वस्थ होते हैं या उन्हें परिवार के जीविकोपार्जन में अपना योगदान देना पड़ता है। ऐसे बच्चों के पोषण स्तर में सुधार लाकर तथा विद्यालय में एक समय का पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराकर उनका ठहराव सुनिश्चित करने का प्रयास किया जा रहा है ताकि वो शिक्षा ग्रहण करके अच्छे नागरिक बनने के मार्ग पर अग्रसर हो सके।

सीखने के स्तर को बढ़ाना :–

आर्थिक समस्या या स्वास्थ्य ठीक ना होने के कारण विद्यालय में नियमित रूप से तथा पूरे समय उपस्थित न रहने के कारण बच्चों का सीखने का स्तर निम्न रहता है तथा बच्चे न्यूनतम अधिगम स्तर को भी प्राप्त नहीं कर पाते। मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम के द्वारा ऐसा प्रयास किया जा रहा है कि एक समय भोजन विद्यालय में उपलब्ध कराकर कमजोर आर्थिक स्थिति वाले बच्चों को सहायता प्रदान की जाये तथा शारीरिक रूप से अस्वस्थ बच्चों के पोषण स्तर में सुधार करके उन्हें नियमित रूप से तथा पूरे समय विद्यालय में रूकने के लिये प्रेरित किया जाये तथा इस प्रकार उन्हे पढाई के लिये प्रेरित किया जाये जिससे उनके सीखने के स्तर को बढ़ाया जा सके।

वंचित वर्ग के परिवारों को शिक्षा के प्रति जागरूक करना :–

ऐसे वर्ग जो आर्थिक व सामाजिक रूप से पिछड़े हुए हैं तथा शिक्षा के प्रति उनमें किसी प्रकार की जागरूकता नहीं है। ऐसे माता–पिता ना तो स्वयं शिक्षित है तथा ना ही अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरूक है। ऐसे में माता–पिता को विद्यालय ना भेजकर किसी कार्य में लगा देते हैं जिससे उनको थोड़ी सी आर्थिक सहायता प्राप्त हो जाती है लेकिन उनके बच्चों का भविष्य शिक्षा से वंचित रह जाने के कारण अंधकारमय हो जाता है। मिड–डे–मील कार्यक्रम ऐसे माता–पिता को अपने बच्चों के शिक्षा ग्रहण करने के लिये विद्यालय भेजने को प्रेरित करने के लिये एक प्रयास हे ताकि बच्चों की वजह से उनके आर्थिक भार को कुछ कम किया जा सके तथा विद्यालय से संपर्क स्थापित हो जाने के कारण उन्हें बच्चों की शिक्षा के प्रति प्रेरित किया जा सके तथा उन्हें शिक्षा के प्रति जागरूक बनाया जा सके।

बालक/बालिकाओं का शिक्षा के प्रति रूझान पैदा करना :–

इस कार्यक्रम के द्वारा कक्षा 1–8 तक के बच्चों को विद्यालय में ही पका भोजन देने की व्यवस्था की गई है ताकि वो पूरा समय विद्यालय में ही उपस्थित रहे तथा उन्हे बीच समय में विद्यालय तक रहने के कारण शिक्षकों द्वारा उन्हे प्रेरणा मिलती है तथा उनका मन पढ़ाई में लगने लगता है तथा उनके शैक्षणिक स्तर में वृद्धि होती है जिससे उनका शिक्षा के प्रति रूझान पैदा होता है।

सूखाग्रस्त क्षेत्रों में ग्रीष्मावकाश के दौरान पोषण सहायता देना :–

बच्चों को सूखाग्रस्त तथा अभावग्रस्त क्षेत्रों में ग्रीष्मावकाश के दौरान बच्चों को नियमित रूप पौष्टिक भोजन उपलब्ध न हो सकने के कारण ग्रीष्मावकाश के दौरान भी इस कार्यक्रम की व्यवस्था की गई है ताकि बच्चों के पोषण स्तर में गिरावट आने की संभावना को समाप्त किया जा सके तथा शिक्षा के प्रति उनका रूझान बनाये रखा जा सके।

छात्रों में अच्छी आदतों को बढ़ावा देना :–

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत सभी विद्यार्थियों को (कक्षा 1–8 तक के) एक साथ बैठाकर भोजन वितरित करने की व्यवस्था की गई है जिससे विद्यार्थियों में एक दूसरे का सहयोग करने की भावना विकसित की जा सके तथा उनमें सफाई सम्बन्धी अच्छी आदतों जैसे खाना–खाने से पहले तथा बाद में हाथ साफ करना, खाना खाने के स्थान की सफाई करना आदि का विकास किया जा सके।

छात्रों में सामाजिक समानता को बढ़ावा देना :–

एक साथ सबको बैठाकर भोजन कराने की व्यवस्था होने के कारण सभी वर्गों के बच्चे एक दूसरे को समान समझते हैं तथा बच्चों में अपने से निम्न वर्ग के बच्चों के प्रति घृणा नहीं पनपती जिससे समाजवादी समाज की स्थापना के लिये पृष्ठभूमि तैयार होती है।